1

रविवार

मत्ती 21:1-11; 26:6-13; मरकुस 11:1-11; 14:3-9; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:1-19

''जब वह जा रहा था, तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुंचा, तो चेलों की सारी मण्डली ... आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी'' (लूका 19:36, 37)।

कितना बढ़िया दिन था! कितना बढ़िया सप्ताह था! यह उस सप्ताह का आरम्भ ही था जब परमेश्वर का पुत्र यीशु मरा! यह सप्ताह परमेश्वर के सबसे बड़े काम अर्थात क्रूस के द्वारा उसके काम का सप्ताह था! यह वह सप्ताह था, जिसने दुनिया को बदल दिया, जिसने मुझे बदल दिया!

विवरणों को इकट्ठा करने पर, बाइबल से मसीह के जीवन के केवल चालीस से अधिक सप्ताहों का ही पता चलता है, तौ भी उसकी मृत्यु के सप्ताह का ईश्वरीय विवरण उसकी गतिविधियों की कई बातें देता है। इस एक सप्ताह में यीशु द्वारा किए गए कामों से नये नियम की मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों का एक तिहाई भाग भर जाता है: यूहन्ना रचित सुसमाचार में तो आधा है। केवल स्थान दिए जाने से पता चल जाता है कि उस सप्ताह का महत्व सबसे अधिक है।

अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने यरूशलेम में अधिक समय नहीं बिताया। अब उसने यरूशलेम को जाने का दृढ़ निश्चय किया (लूका 9:51)। हालात अपने हाथ में होने पर भी वह यरूशलेम में मरने गया।

इस दौरान यीशु ने क्या किया? उसने सिखाया! वह क्रूस पर भी सबक दे रहा था! यहूदियों का दावा था कि उन्हें मसीहा की आवश्यकता है;[1] परन्तु जब वह आया तो उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया! उसने मसीहा की उनकी अवधारणा को पूरा नहीं किया। क्या वह हमारी अवधारणाओं के अनुसार सही है?

आइए, उस सप्ताह को देखते हैं, जिसने दुनिया को बदल दिया। पूरा अनन्तकाल उसी पर निर्भर है कि यीशु ने इस सप्ताह में क्या किया और हम उसे कैसे मानते हैं।

अभिषेक

रविवार की पहली घटना यीशु का अभिषेक था (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:1-8)। वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था! ''वहां उन्होंने उसके लिए भोजन तैयार किया, और मारथा सेवा कर रही थी, और लाज़र उन में से एक था, जो उसके साथ भोजन करने

के लिए बैठे थे'' (यूहन्ना 12:2)।[2] भोजन के समय मरियम ने बहुमूल्य इत्र से यीशु का अभिषेक किया। इस इत्र का दाम एक आम आदमी की सालभर की मज़दूरी के बराबर था।

यहां हमें ग्रहण करने पर सबक मिलता है। अपने जीवनभर यीशु देता रहा था। संकट के समय में पाने से शायद देना आसान होता है, परन्तु यीशु ने दोनों ही बातें सिखाईं।

यहां यहूदा के वास्तविक स्वभाव का आधार मिलता है, जब उसने कहा, ''यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया गया? ...'' (यूहन्ना 12:4-6)। यह आश्चर्यजनक है कि प्रेरितों[3] को कैसा लगा कि वे लोगों के बीच यीशु की आलोचना कर सकते हैं! यीशु को उनकी डांट कठोर और अपमानजनक लगी थी।

परोपकार हमारे लिए और दूसरों के लिए आशीष है, परन्तु यीशु की सेवा परोपकार से अधिक महत्वपूर्ण है। यीशु को यीशु *के लिए* दिया गया कुछ भी ''व्यर्थ'' नहीं हो सकता। यीशु ने यहूदा के दोषपूर्ण उद्देश्यों को प्रकट किया और प्रेम के मरियम के अनमोल उपहार का सम्मान किया। प्रेम से यीशु को दिया गया कुछ भी थोड़ा ही है।

इसी में हम एक और सबक देखते हैं कि सच्चे मित्रों की कीमत आंकी नहीं जा सकती। पहले यीशु ने अपने मित्र लाज़र को मुर्दों में से जिलाया था (यूहन्ना 11)। वही जी उठना यहूदियों के लिए यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का बहाना बन गया था। हमारे भले काम कई बार हमारे लिए परेशानी का कारण भी बन जाते हैं।

विजयी प्रवेश

यीशु का ''महिमामय स्वागत'' कभी नहीं हुआ था। इसके लिए उसने यह समय चुना (देखें मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-15)। वह गधे पर चढ़कर यहूदियों के राजा के रूप में नगर में गया। ऐसा करके उसने लोगों को अपने विषय में निर्णय लेने के लिए विवश किया। ''मुझे स्वीकार करो या मार डालो!'' वह कह रहा था। उसने सावधानीपूर्वक अपने ''विजयी प्रवेश'' की योजना बनाई।

उसने दो चेलों[4] को गधी का एक बच्चा लाने के लिए भेजा, जिस पर कोई सवार न हुआ हो। यह आश्चर्यजनक है! गधी के बच्चे का मालिक यीशु को जानता होगा और उस पर विश्वास करता होगा। यीशु को किसी से गधा मांगना पड़ा, क्योंकि वह ''बिन पैसे के राजा'' था। वह प्रजा के पास गया, जबकि आम तौर पर प्रजा राजा के पास आती थी।

लोगों ने रास्ते में उसके आगे डालियां और कपड़े बिछा दिए। वे ''होशाना'' कहते हुए पुकार रहे थे, जिसका अर्थ है, ''बचाओ, हम प्रार्थना करते हैं।'' उसके शानदार प्रवेश से जकर्याह 9:9 की भविष्यवाणी पूरी हो गई।

यरूशलेम पहुंचने पर यीशु भावुक हो गया, उसका मन दुख से टूट गया। वह यरूशलेम पर रोया (लूका 19:41)। उन लोगों के लिए उसका रोना सुनाई दे रहा था, जिन्होंने उसे ठुकराना था। यरूशलेम परमेश्वर का चुना हुआ नगर था। दस हज़ार यादें मिट रही थीं यानी समय तेज़ी से बीत रहा था। यरूशलेम पूरी तरह से नष्ट किया जाने वाला था (67ई.-70ई.)।

शांतिपूर्वक गधे पर सवार होकर यीशु नगर में आया। उसके कामों से रोमियों को कोई परेशानी नहीं हुई, जिन्होंने शीघ्र ही उसे क्रूस पर चढ़ाना था।

रविवार की भीड़ में गलीली लोग थे; परन्तु गुरुवार और शुक्रवार वाली भीड़ यहूदिया के लोगों की थी और यही भीड़ उसकी मृत्यु की मांग करने वाली थी। शांति के राजकुमार के नगर में आने पर उसका आदर महिमा भरे गीतों से किया गया था, परन्तु इसने उसके शत्रुओं को कार्रवाई करने के लिए विवश कर दिया। उन्हें लगा कि लोग उसके पीछे हो लेंगे (यूहन्ना 12:19)।

फरीसी घबरा गए थे! उन्होंने यीशु को अपने चेलों को डांटने (चुप कराने) की आज्ञा दी, पर यीशु ने इनकार कर दिया। यदि उसके चेले उसकी महिमा न करते तो पत्थरों ने उसकी महिमा के लिए पुकार उठना था (लूका 19:40)। यह ''महिमा भरा स्वागत'' यादगारी था। यरूशलेम ने तो सुनने से इनकार कर दिया, लोगों को *देखने* में दिक्कत नहीं आई।

यीशु का ''महिमा भरा स्वागत'' हुआ था। क्या हम भी वैसे ही उसका स्वागत करेंगे?

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणियां

[1]''अभिषिक्त'' के अर्थ वाला इब्रानी शब्द ''मसायाह'' यूनानी शब्द ''ख्रीस्त'' का समानान्तर है (देखें यूहन्ना 1:41; 4:25)। [2]यह घटना हमारे समय के अनुसार शनिवार शाम को हुई। हमारा दिन 12 बजे आधी रात को आरम्भ होता है, जबकि यूहदी दिन का आरम्भ शाम 6 बजे होता है। इसलिए यह भोज रविवार को आरम्भ पर हुआ। यूहन्ना ने इसके कालक्रमिक सूत्र दिए हैं: (1) यीशु फसह से छह दिन पहले बैतिनय्याह नगर में पहुंचा (यूहन्ना 12:1) और (2) उसका विजयी प्रवेश भोज के बाद ''अगले दिन'' हुआ (यूहन्ना 12:12)। [3]प्रेरित ''भेजे हुए'' दूत थे। वे यीशु द्वारा अपने राज्य को फैलाने में सहायता के लिए चुने गए बारह पुरुष थे (देखें लूका 6:13-16)। [4]''चेले'' का अर्थ ''अनुयायी'' या ''सीखने वाले'' है। आमतौर पर इस शब्द का इस्तेमाल यीशु के अनुयायियों के लिए (देखें मत्ती 9:14) और कई बार बारह प्रेरितों के लिए किया जाता है (देखें मत्ती 10:1)।